परमात्म ऊर्जा

अपने स्वरूप, स्वदेश, स्वधर्म, श्रेष्ठ कर्म, श्रेष्ठ स्थिति में रहते हुए चलते हो? क्योंकि वर्तमान समय इसी स्व स्थिति से ही सर्व परिस्थितियों को पार कर सकेंगे अर्थात् 'पास विद ऑनर' बन सकेंगे। सिर्फ स्व शब्द ही याद रहे तो स्व स्वरूप, स्वधर्म, स्वदेश ऑटोमेटिकली याद रहेगा। तो क्या एक स्व शब्द याद नहीं रह सकता? सभी आत्माओं को आवश्यकता है स्व स्वरूप और स्वधर्म में स्थित कराते स्वदेशी बनाने की। तो जिस कर्त्तव्य के लिए निमित्त हो अथवा जिस कर्त्तव्य के लिए अवतरित हुए हो, तो क्या कोई कर्त्तव्य को व अपने आपको जानते हुए, मानते हुए भूल सकते हैं क्या? आज कोई लौकिक कर्त्तव्य करते हुए अपने कर्त्तव्य को भूलते हैं? डॉ. अपने डॉक्टरी के कर्त्तव्य को चलते-फिरते, खाते-पीते, अनेक कार्य करते हुए यह भूल जाता है क्या कि मेरा कर्त्तव्य डॉक्टरी का है? तुम ब्राह्मण, जिन्हों का जन्म और कर्म यही है कि सर्व आत्माओं को स्व-स्वरूप, स्वधर्म की स्थिति में स्थित कराना, तो क्या ब्राह्मणों को व ब्रह्माकुमार-कुमारियों को यह अपना कर्त्तव्य भूल सकता है? दूसरी बात- जब कोई वस्तु सदाकाल साथ, सम्मुख रहती है वह कभी भूल सकती है? अति समीप ते समीप और सदा साथ रहने वाली चीज़ कौन-सी है? आत्मा के सदा समीप और सदा साथ रहने वाली वस्तु कौन-सी है? शरीर व देह, यह सदैव साथ होने कारण निरन्तर याद रहती है ना! भुलाते हुए भी भूलती नहीं है। ऐसे ही अब आप श्रेष्ठ आत्माओं के सदा समीप और सदा साथ रहने वाला कौन है? बापदादा सदा साथ, सदा सम्मुख है। जबकि देह जो साथ रहती है वह कभी भूलती नहीं, तो बाप इतना समीप होते हुए भी क्यों भूलता है? वर्तमान समय कम्पलेन क्या करते हो? बाप की याद भूल जाती है। बहुत जन्मों के साथ रही हुई वस्तु देह व देह के सम्बन्धी नहीं भूलते तो जिससे सर्व खज़ानों की प्राप्ति होती है और सदा पास है वह क्यों भूलना चाहिए? चढ़ाने वाला याद आना चाहिए व गिराने वाला? अगर ठोकर लगाने वाला भूल से भी याद आयेगा तो उनको हटा देंगे ना! तो चढ़ाने वाला क्यों भूलता है? जब ब्राह्मण अपने स्व स्थिति में, स्व स्मृति में व श्रेष्ठ स्मृति में स्थित रहें तो अन्य आत्माओं को स्थित करा सकेंगे।

सिंगरौली-विंध्यनगर(म.प्र.)। ब्रह्माकुमारीज़ द्वारा एनसीएल के निगाही क्षेत्र में वार्षिक खान सुरक्षा सप्ताह एवं पारितोषिक वितरण समारोह के अवसर पर 'सम्पूर्ण स्वास्थ्य सुरक्षा, व्यसन मुक्ति एवं आध्यात्मिक सशक्तिकरण प्रदर्शनी' का आयोजन किया गया। इस दौरान महानिदेशक,खान सुरक्षा महानिदेशालय,सीएमडी एनसीएल, उपमहानिदेशक खान सुरक्षा,गाज़ियाबाद,निदेशक मंडल एनसीएल, डीएमएस वाराणसी, जेसीसी सदस्य, सीएमओएआई महासचिव एवं सासन पॉवर के प्रतिनिधियों ने प्रदर्शनी अवलोकन के साथ-साथ उद्घाटन भी किया।

कथा सरिता

शहर की एक कॉलोनी में एक बुजुर्ग कपल अंकल और आंटी रहते थे। उस कॉलोनी को बने अभी थोड़ा समय ही हुआ था इसीलिए उसमें 4 से 5 ही घर बसे हुए थे। इनका बेटा इन्हें छोड़कर अपनी पत्नी के साथ विदेश में रहता था क्योंकि पत्नी ये नहीं चाहती थी कि वह घर पर रहकर अपने सास-ससुर की मदद करे।

ये बुजुर्ग अंकल और आंटी जिस कॉलोनी में रहते थे उन्हें हमेशा से यह डर रहता था कि कहीं कोई घटना ना हो जाये इसलिए वे ज़्यादा घर से बाहर नहीं निकलते थे। लेकिन उनका यह रूटीन था कि वह हर सुबह सूरज निकलने के बाद टहलने के लिए निकल जाते थे।

एक दिन दोनों रोज़ की तरह ही सुबह को टहलने निकले थे,उन्होंने देखा कि एक लड़का तेजी से साइकिल चलाता हुआ जा रहा था और उस साइकिल के पीछे एक फावड़ा बंधा हुआ था लेकिन उन्होंने ज़्यादा ध्यान नहीं दिया और चले गए।

दूसरे दिन उसी समय फिर से वह लड़का दिखा और उसी तरह तेजी से साइकिल चलाता जा रहा था, इसी तरह तीसरे और चौथे दिन भी वह लड़का दिखा।

पाँचवे दिन आंटी जी ने अंकल जी से पूछा कि ये लड़का हर रोज़ सुबह इसी समय तेजी से साइकिल चलाते हुए जाता है मुझे लगता है कि कुछ गड़बड़ है कहीं ये लड़का कोई गलत काम करने तो नहीं जा रहा है। लेकिन अंकल जी ने मना कर दिया कि जा रहा होगा कहीं हमसे क्या, परन्तु आंटी जी बोली हमको देखना चाहिए कि हमारी कॉलोनी में कोई गड़बड़ तो नहीं। अंकल जी बोले ठीक है अगले दिन हम इस लड़के का पीछे करेंगे और देखेंगे कि ये जा कहाँ रहा है।

अगले दिन सुबह को फिर से वो लड़का तेजी से साइकिल चलाता निकला और उनके

पीछे अंकल और आंटी जी भी गये। उन्होंने देखा कि थोड़ी दूर जाने के बाद उस लड़के ने एक पेड़ के पास साइकिल खड़ी कर दी, उसी पेड़ के पास थोड़ी-सी खाली ज़मीन पड़ी थी और उसे वो खोदने लगा।

अंकल और आंटी जी कुछ देर तक देखते रहे कि ये लड़का क्या कर रहा है लेकिन लड़का ज़मीन खोदे जा रहा था कुछ देर बाद उन्होंने लड़के से पूछा कि आप ये ज़मीन क्यों खोद रहे हो?

लड़के ने मुस्कुराते हुए कहा कि अंकल जी मैं आप दोनों को रोज़ देखता हूँ लेकिन आपको मुझसे डरने की ज़रूरत नहीं और यहाँ ज़मीन इसलिए खोद रहा हूँ कि मेरी नयी-नयी नौकरी लगी है।

अंकल ने पूछा कहाँ नौकरी लगी है ऐसा कौन-सा काम है जिसमें ज़मीन खोदनी है।

लड़के ने कहा मैं बड़े दिन से बेरोज़गार था फाइनली मुझे फार्म हाऊस में काम मिला है और उन्हें ऐसे लड़के की ज़रूरत है जिसे काम करने का अनुभव हो और मेरे पास कोई भी अनुभव नहीं है इसलिए मैं रोज़ यहाँ फावड़ा लेकर आता हूँ और ज़मीन खोदने की प्रैक्टिस करता हूँ ताकि जैसे ही नौकरी पर काम शुरू हो उसमें हमें निकाल ना दिया जाये इसलिए रोज़ाना मेहनत कर रहा हूँ कोशिश कर रहा हूँ।

उस लड़के की बात सुनने के बाद अंकल और आंटी जी ने लड़के को आशीर्वाद दिया और बोला बहुत ही बढ़िया बात है, प्रयास ही ज़िंदगी में सबकुछ है। यह छोटी-सी कहानी ज़िंदगी में बहुत बड़ी बात सिखाती है।

बीती बातों को भूल आगे की सुध लें...

एक बार की बात है एक राजा के पास बड़ा सुन्दर विशाल महल था और उस विशाल महल में एक सुंदर-सा बगीचा था। उस सुन्दर से बगीचे में एक माली था और अंगूरों की बेल थी। माली इस बात से परेशान था कि अंगूरों की बेल पर रोज़ाना एक चिड़िया आकर के आक्रमण करती थी। और कुछ इस तरीके से वो आक्रमण करती थी जिससे कि जो मीठे-मीठे अंगूर थे उसे तो खा लेती थी और जो अधपके थे, खट्टे थे उसे ज़मीन पर गिरा देती थी।

माली इस बात से बड़ा परेशान चल रहा था कि इन अंगूरों की बेल को ये चिड़िया एक दिन तबाह कर देगी, नष्ट कर देगी। उसने बहुत कोशिश की, लेकिन उसको कोई उपाय मिला नहीं तो वो राजा के पास पहुंचा और कहा मालिक,हुकुम आपही कुछ कीजिये मुझसे कुछ हो नहीं पा रहा है। अंगूरों की बेल कभी भी खत्म हो सकती है। राजा ने कहा माली साहब आप चिंता मत कीजिये आपका काम मैं करूँगा।

अगले दिन राजा खुद वहाँ पहुंचे और अंगूरों की बेल के पीछे जाकर छुप गए और जैसे ही चिड़िया आई राजा ने फुर्ती दिखाते हुए चिड़िया को पकड़ लिया।

जैसे ही चिड़िया को पकड़ा चिड़िया ने राजा से कहा हे राजन, मुझे माफ करना मुझे मत मारो मैं आपको चार ज्ञान की बातें बताउंगी। राजा बहुत गुस्से में था, राजा ने कहा पहली बात बताओ चिड़िया ने कहा अपने हाथ में आए शत्रु को कभी भी जाने न दें।

राजा ने कहा दूसरी बात बता- चिड़िया ने कहा कभी भी असंभव बात पर यकीन न करें। राजा ने कहा बहुत हो गया ड्रामा तीसरी बात बताओ- चिड़िया ने कहा बीती बात का पछतावा न करें।

राजा ने कहा अब चौथी बात बता- अब खेल खत्म करता हूँ। बहुत देर से परेशान कर रखा है।

चिड़िया ने कहा राजा साहब अपने जिस तरीके से मुझे पकड़ रखा है मुझे साँस नहीं आ रहा, आप मुझे थोड़ी-सी ढील देंगे तो शायद मैं आपको चौथी बात बता पाऊं, राजा ने हल्की-सी ढील दी। और चिड़िया उड़ करके डाल पर बैठ गई। चिड़िया ने कहा मेरे पेट में दो हीरे हैं ये सुन करके राजा पश्चाताप करने लगा और उदास हो गया। राजा की ये शक्ल देख कर चिड़िया ने कहा-राजा साहब मैंने जो आपको अभी चार ज्ञान की बातें बताईं थी पहली बात बताई थी, अपने शत्रु को कभी हाथ में आने के बाद छोड़ें नहीं,
आपने हाथ में आए शत्रु यानी मुझे छोड़ दिया। दूसरी बात, असम्भव बात पर यकीन न करें। आपने यकीन कर लिया कि मेरे छोटे से पेट में दो हीरे हैं।

तीसरी बात, बीती हुई बात पर पश्चाताप न करें। आप उदास हैं आप पश्चाताप कर रहे हैं। जबकि मेरे पेट में हीरे है ही नहीं। उसको सोच करके आप पश्चाताप कर रहे हैं।

उस चिड़िया ने राजा को नहीं हम सबको भी बताया कि ज़िंदगी में जो हो गया, आपका उसपर कंट्रोल नहीं है, लेकिन जो होगा उसको आप बदल सकते हैं।